Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

ग्रामीण भारत में सामाजिक स्तरीकरण और गतिशीलता के बदलते प्रतिमान

Surendra Narayan*

Research Scholar, Bundelkhand University, Jhansi

सार – *ग्रामीण संदर्भ में सामाजिक स्तरीकरण के बदलते प्रतिमानों के बारे में मध्यक्षेत्रीय सामान्वीयकरण एक कठिन कार्य है। आजकल समूह और व्यक्ति दोनो प्रकार्यात्मक प्रभावशाली भूमिका निभा रहे है। इसके नाते सामाजिक स्तरीकरण के प्रतिमान भी बदल हैं। गाँवों में जाति आज भी सामाजिक स्तरीकरण की एक मुख्य इकाई है। परन्तु अन्य कारक भी विभेदीकरण लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। गाँवों में आजकल जाति के नाम से व्यक्ति को सामाजिक संस्तरण में स्थान नहीं मिल रहा है बल्कि उसकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति इसमें महत्वपूर्ण हो गई है। गाँवों के वे लोग जो अपनी आर्थिक स्थिति को खेती, रोजगार, शिक्षा आदि के माध्यम से अच्छा बना लिये है और जिनका बाह्य जगत से सम्पर्क बढ़ गया है ऐसे लोगों की सामाजिक प्रस्थिति बदली है और सामाजिक स्तरीकरण में इनके वर्ग की स्थिति उँची हुई है भले ही जाति की स्थिति यथावत हो। इसी क्रम में उच्च जाति के व्यक्ति का वर्ग नीचाँ हो सकता है और निम्न जाति के व्यक्ति का वर्ग ऊँचा हो सकता है।*

कुंजीशब्द – *ग्रामीण भारत में सामाजिक, गतिशीलता, बदलते प्रतिमान*

----------X----------

प्रस्तावना

ग्रामीण भारत में सामाजिक स्तरीकरण का बदलता स्वरूप

"सामाजिक स्तरीकरण एक सामाजिक तथ्य है, जो मानव समाज में असमानता सम्बन्धित समस्याओं की व्याख्या करता है। अनेक मानव समाज में सामाजिक स्तरीकरण समाज के संरचना, प्रक्रियायें, इसके ऐतिहासिक और वर्तमान आधारों के विशेषताओं की व्याख्या करता है सामाजिक स्तरीकरण की संरचना में अनेक प्रकार की शक्तियों एवं कारक एक साथ मिलकर प्रभाव डालते है इसमें वैचारिकी, प्रदत्त और अर्जित परिस्थिति, प्रौधोगिकी, आर्थिक विकास आदि कारक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। ग्रामीण भारत में "जाति-प्रारूप" पर विचार व्यक्त किये गये है। जातियों सामाजिक संरचना और प्रक्रिया की ओरा संकेत करती है कि तथा एक सांस्कृतिक विशेषतायें है। ग्रामीण भारत में जाति-वर्ग का एक मिश्रित रूप देखने को मिलता है और इस मिलन में एक प्रकार की निरन्तरता और परिवर्तन देखा जा रहा है।

ग्रामीण जाति-वर्ग के द्वन्दात्मक स्वरूप और इसके अनेक स्तर भी बदल रहें है। जाति-संरचना में जाति गतिशील अनेक स्तरों पर देखी जा रहीं है। इस गतिशीलता को हम व्यक्ति, परिवार, समूह के स्तर पर देख रहे हैं। गतिशीलता का अर्थ केवल रेखीय गतिशीलता से नहीं है जिसमें व्यक्ति, परिवार, समूह उपर की ओर बढ़ते है बल्कि कुछ क्षेत्रों में जाति-वर्गो में नीचे की ओर बढ़ने की उन्मुखता देखी जा सकती है।

स्तरीकरण में व्यक्तियों और समूहों का अनेक आधार पर मूल्यांकन करके उनको श्रेणियों में विभक्त किया जाता है, ये विभाजन सामाजिक मूल्यों पर आधारित कुछ अनुभावों के आधार पर होता है। (बेकर एण्ड बासकाँफ) कहीं-कहीं स्तरीय के अन्तर्गत केवल एक आधार को लेकर व्यक्तियों को श्रेणिगत किया जाता है। उदाहरण के लिए आयु, लिंग, भौतिक शक्ति, सम्पत्ति, परिवार की परिस्थिति आदि। परन्तु इस प्रकार का स्तरीकरण साधारण समाजों में पाया जाता है। मानव में जबसे जागरूकता आयी है तबसे वह समतावादी समाज की कल्पना करता रहा है और एक ऐसा समाज के निर्माण का स्वप्न देखता है, जिसमें सब सदस्य समान हों, ऐसे समाजों में प्रतिष्ठा के आधार पर श्रेणीबद्ध नहीं किया जाता सहैसमाज में न कोई उच्च होगा न कोई निम्न होगा, सबके पास बराबर सम्पत्ति होगी और जनता के हाथ में शक्ति एक वास्तविकता के रूप में होगी।

www.ignited.in

परन्तु इस प्रकार के समाज का निर्माण केवल स्वप्न में ही हो सकता है। यर्थाथ रूप में सम्भव नहीं है क्योंकि संसार में जितने मानव समाज है, साधारण से जटिल समाज तक में किसी न किसी प्रकार की सामाजिक असमानता पायी जाती है ऐसे समाजों में सत्ता और सम्मान असमान रूप से व्यक्तियों और समूहों के बीच उनको एकता और गुणों के आधार पर प्रदान किया जाता है। पूँजीवादी समाजों में धन का वितरण असमान रूप से पाया जाता है।

सत्ता का अर्थ है व्यक्ति अथवा समूह अपनी इच्छाओं को किस रूप में किसी दूसरे पर लादतें हैं। आदर और सम्मान (Prestige) आदर समाज में अनेक सामजिक परिस्थितियों से जुड़ा होता है और व्यक्तियों के गुणों और जीवन शैली के आधार पर प्रदान किया जाता है! श्धनश् का अर्थ है भैतिक स्वामित्व जिसे समाज में मूल्यवान माना जाता है। इसके अन्तर्गत भूमि, पशुधन, आवास, पैसा और अन्य प्रकार की सम्पत्तियाँ आती है जो व्यक्ति अथवा समूह अपने पास रखते है। सामाजिक असमानता और सामाजिक स्तरीकरण में अन्तरः सामाजिक असमानता और सामाजिक स्तरीकरण में अन्तर है।

सामाजिक आधार पर निर्मित असमानता ध्सामाजिक स्तरीय सामाजिक असमानता का एक विशेष स्वरूप है। इसके अन्तर्गत कुछ सामाजिक समूह होतें हैं जो श्रेणीबद्ध तरीके से एक दूसरे के ऊपर नीचे होते हैं। ये श्रेणिबद्धता, सत्ता, आदर और सम्मान धन आदि के आधार पर होता है।

इस प्रकार के समूह अथवा संस्तरण में समान उद्देश्य और समान पहचान होती है जिसके प्रति लोग जागरूक होते है। इनकी जीवन शैली भी समान होती है जो अन्य संस्तरण से भिन्न होते हैं।

जाति-व्यवस्था पर आधारित भारतीय समाज इन्ही विशेषताओं की ओर इंगित करता है। भारतीय समाज वर्ण-व्यवस्था में विभाजित था धीरे-धीरे अन्य जातियों में विभक्त हो गया। जाति के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण अनेक सामाजिक समूहों का संस्तरीत रूप है। एक प्रकार के संस्तरण के लोगो में समान पहचान समान जीवन शैली होती है। इस तरह से सामाजिक स्तरीकरण, सामाजिक असमानता का एक स्वरूप है। ऐसा नहीं हो सकता है कि समाज में सामाजिक असमानता हो और सामाजिक संस्तरण न पाया जाय।

जटिल समाजों में सामाजिक स्तरीकरण अनेक आधारों पर पाया जाता सहै। और इसमें अनेक प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक समूह भी मिलते हैं।

इन्हीं को समाजशास्त्रीयों ने "सामाजिक संस्तरण" कहा है। इसी के अनेक प्रकारों को सामाजिक वर्ग, जाति, जागीरदारी आदि की संज्ञा दी गयी है। इस तरह से सामाजिक स्तरीकरण अनेक समूहों का श्रेणीबद्ध तरीके से विभाजन है। सामाजिक समूह उच्च और निम्न श्रेणियों में विभक्त किये जाते है। (Social stratification is system of ranking of groups that are exclusive and exhaustive in nature) समूहों का उच्च और निम्न श्रेणियों में विभाजन श्रेष्ठता और निम्नता के आधार पर किया जाता है। स्तरीकरण के प्रतिमानों की विभिन्नता समाज में श्रेणियों के विभाजन के नियमों और अनेक लोगों के बीच अन्तः क्रिया के ढंगो तथा संस्तरण के खुले या बंद स्वरूप पर निर्भर करता है। इकाइयों के बीच उच्च और निम्न श्रेणियों में सम्बन्ध कुछ सामाजिक प्रतिमानों पर आधारित होते है। इनकों हिम "सामाजिक सम्बन्ध" कहतें है।

"पारसंस ने सामज में सामाजिक सम्बन्धों को प्रतिमानित तथा व्यवस्थित करने की व्यवस्था को स्तरीकरण कहा है।" (Patterning and auditing of social relation is stratification system of society). समाजशास्त्रियों ने अनेक विशेषताओं के आधार पर स्तीकरण के सिद्धान्तों को विकसित किसा है। इन समाजों में समानता और विभिन्नता दोनों है। जैसा कि मार्क्सवादी और प्रकार्यवादी सिद्धान्तों में हम पातें है।

Andre Betoi सामाजिक स्तरीकरण के प्रतिमानों की पहचान करना एक जटिल समस्या है क्योंकि उन जटिल प्रक्रियाओं का पता लगाना कठिन हो जाता है। जो किसी समाज के स्तरीकरण के व्यवस्था को बदलते है। क्योंकि इनमें वैचारिकी की समस्यायें पायी जाती है। इन प्रक्रियाओं की पहचान संर्घष, सहयोग, सामूहिक चेतना आदि है, जो किसी स्तरीत संस्तरण में पाया जाता है।

भारत में जब हम सामाजिक स्तरीकरण के बदलतें प्रतिमानों का विश्लेषण करने का प्रयास करते है तो ये कार्य कुछ चुनी हुई प्रक्रियाओं के माध्यम से करतें है। केवल जाति, वर्ग, पूँजीवाद, समाजवाद आदि के आधार पर स्तरीकरण का विश्लेषण करना न्यायोचित नहीं लगता क्योंकि ये सब

व्यवस्थायें समाज के 'परिस्थितियों की व्यवस्थाश् से सम्बन्धित है स्तरीकण के प्रक्रियाओं से नहीं मार्क्सवादी और प्रकार्यवादी उपागमजो स्तरीकरण का विश्लेषण करता है उसमें कुछ त्रुटियाँ पायी जाती है।

ग्रामीण भारत के सामाजिक स्तरीकरण के बदलते प्रतिमानों पर योगेन्द्र सिंह के विचार:

योगेन्द्र सिंह का कहना है कि भारत में सामाजिक स्तरीकरण के बदलतें प्रतिमानों के अध्ययन के लिए कुछ चुनी हुई प्रक्रियाओं का प्रयोग किया गया है। जैसे कि जाति, वर्ग, पूँजीवादी, समाजवाद क्योंकि ये स्तरीकरण के अनेक व्यवस्थाओं से सम्बन्धित है। कुछ महत्वपूर्ण प्रक्रियायें जिनके माध्यम से सामाजिक स्तरीकरण में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण किया जाता है निम्नलिखित हैरू

(क) स्तरीकरण का खुला या बन्द स्वरूप

इसकी जानकारी सामाजिक परिवर्तन के गतिशीलता के आधार पर होता है। साथ ही साथ सत्ता, व्यावसायिक गतिशीलता स्तरीकरण के प्रतिमानों को प्रभावित करते है। सामाजिक संरचना में विशेषीकरण के फलस्वरूप परिवर्तन आते हैं। .

(ख) अनेक समाजों के प्रतिस्पर्धा

संघर्ष और सहयोग भी स्तरीकरण के स्वरूप को प्रभावित करतें है। इसके नाते वर्ग, संघर्ष, जाति, तनाव और जाति समूह गुटबन्दी आदि का निर्माण होता है। जिसके माध्यम से लोग आर्थिक और राजनीतिक सत्ता को हथियाने का प्रयास करते हैं।

सामाजिक स्तरीकरण के खुल या बन्द स्वरूप का सूचक सामाजिक गतिशीलता होती है। जब यह गतिशीलता संस्थागत हो जाती है तब स्तरीकरण में परिवर्तन आता है। जातियों में जाति-व्यवस्था पर आधारित स्तरीकरण में गतिशीलता का अभाव था परन्तु इसमें अब इसमें धीरे-धीरे खुलापन आ रहा है। जातियों में प्रवास, सम्पत्ति, सत्ता शक्ति के आधार पर स्तरीकरण की रूपरेखा निर्धारित होती है। ग्रामीण भारत में सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था भी स्तरीकरण का आधार है।

प्रो० श्री निवास ने संस्कृतिकरण और पश्चिमीकरण के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता का विश्लेषण किया है। इन दोनों प्रकार की प्रक्रियाओं के माध्यम से निम्न जातियाँ उच्च जातियों का अनुसरण करके उनके सामाजिक स्तरीकरण में होना वाले परिवर्तनों की मनोवृत्तियों को निम्नलिखित ढंग से व्यक्त किया जा सकता है

1. गांव और क्षेत्र के स्तर पर सामाजिक गतिशीलता का स्वरूप रेखीय है, और कुछ उच्च जातियों में इस गतिशीलता का स्वरूप एक विपरित दिशा में देखा जाता है, गाँवों में मध्यम जातियों का प्रभाव बढ़ गया है।
2. राष्ट्रीय स्तर पर आज भी उच्च जातियाँ सत्ता और आर्थिक क्षेत्र में प्रभावशाली है। भारत में इन्हें सत्ता अभिजात वर्ग कहा जाता है।
3. भारत में सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप में समानता नहीं है। क्षेत्रीय और स्थानीय आधारों पर इनमें भिन्नता पायी जाती है। पिछले 50 वर्षों में जो नियोजित और आर्थिक विकास हुए है, नौकरियों में आरक्षण लागू हुआ है, इनके फलस्वरूप सामाजिक असमानताओं में कुछ कमी आयी है।
4. आज भी भारतीय गाँवों में जाति के आधार पर परिवारों और व्यक्तियों के आधार पर सामाजिक परिवर्तन का मापन होता है।

धीरे-धीरे उच्च और निम्न जातियों के दवन्द्वात्मक उपागम के फलस्वरूप आर्थिक और राजनीतिक सत्ता हथियाने के लिए जाति समूह या दबाव समूहों का निर्माण हुआ है। आई०पी०देसाई 'ने व्यावसायिक गतिशीलता पर जो अध्ययन किया है वो मार्क्स के प्रारूप पर आधारित है।

मार्क्स के प्रारूप के आधार पर स्तरीकरण का अध्ययन सेठ और टनखाश् ने किया है। इन लोगों का अध्ययन गाँवों में भूमि परिवर्तन और कृषकों के विभेदीकरण के आधार पर किया है। इन लोगों का कहना है कि गाँवों में वर्ग विभेदीकरण का विश्लेषण मार्क्स के प्रारूप के आधार पर नहीं किया जा सकता। वास्तविकता यह है कि भारत में सामाजिक स्तरीकरण के बदलतें प्रतिमानों का अध्ययन कुछ चुनी हुयी प्रक्रियाओं के आधार पर ही किया जा सकता है न कि. स्तरीकरण के परम्परागत आधारों पर जैसे जाति, वर्ग, पूँजीवाद, समाजवाद, राजशाही आदि आधारों पर महत्वपूर्ण प्रक्रियायें जो समाज में सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन में सहायक होती है। उनमें से कुछ निम्नलिखित है

1. गाँवों में स्तरीकरण का खुला अथवा बन्द रूप गतिशीलता के आधार पर सामाजिक परिस्थितियों में किस प्रकार होता, ये गाँवों क्षेत्र और राष्ट्र के आधार पर किस रूप में पाया जाता है। गाँवों में सामाजिक संस्तरण में समानता असमानता के आधार पर समाजिक परिस्थितियों में कितना विभेदीकरण है।

www.ignited.in

2. सामाजिका समूहों में सत्ता किसा रूप में केन्द्रित है? साथ ही साथ सामाजिक संरचना में व्यवसायिक गतिशीलता किस मात्रा में पायी जाती है।

3. गाँवों में प्रतिस्पर्धा, संघर्ष, सहयोग अनेक संस्तरण के लोगों में किस रूप में किस रूप में पाया जाता है! और इसको नाते वर्ग-संघर्ष जाति तनाव केसे उभर रहे हैं, लोग गाँवों मे जाति समूह कैसे बना रहें है। और गुटबन्दी के आधार पर किस प्रकार आर्थिक संसाधन और राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने की चेष्ठा कर रहे हैं।

सामाजिक स्तरीकरण कहाँ तक खुला अथवा बन्द है? इसका मुख्य सूचक क्या है? यह बहुत कुछ इस पर निर्भर करता है कि प्रत्येक संस्तरण में कहां तक गतिशीलता पायी जाती है, गतिशीलता के अनेक कारक संस्थागत है। परम्परागत रूप से भारत में स्तरीकरण के प्रतिमान जाति-व्यवस्था पर आधारित थे और इसमें सामाजिक परिस्थिति में गतिशीलता के अधिक अवसर नहीं थे। क्योंकि जातियों के व्यवसाय निश्चित थे। थोड़ा बहुत जो गतिशीलता के अवसर थे, उसके अन्तर्गत जातियाँ प्रवास करके किसी दूर के क्षेत्र में चली जाती थी, और जातियों में लोगों को अपना सम्मान और प्रतिष्ठा बढ़ाने के निए धन एकत्र करना पड़ता था या सत्ता को हथियाना पड़ता था।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण भारत में सामाजिक स्तरीकरण का बदलता स्वरूप का अध्ययन

2. स्तरीकरण का खुला या बन्द स्वरूप का अध्ययन

साहित्य की समीक्षा

वर्ण-व्यवस्था के संस्तरण में जातियों की परिस्थिति स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं थी। केवल कुछ बाहरी प्रभावों के फलस्वरूप जातियों के परिस्थिति में परिवर्तन सम्भव था। (सिल्वर वर्ग, 1956, कोहान 1961, 1964) भारत के परम्परागत स्तरीकरण के प्रतिमानों में गतिशीलता बहुत कुछ आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था पर आधारित थी।

(श्रीनिवास 1966) के अनुसार संस्कृतिकरण एवं पश्चिमीकरण की प्रक्रिया ने भारत के सामाजिक स्तरीकरण मे कुछ परिवर्तन लायें। संस्कृतिकरण के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता जातियों में आयी उससे सामाजिक स्तरीकरण प्रभावित हुआ। परन्तु इस परिवर्तन से कोई संरचनात्मक परिवर्तन एवं व्यवस्था का परिवर्तन नहीं हुआ।

जब अंग्रेज भारत में आये, उस समय सामाजिक गतिशीलता का स्वरूप बदलता और धीरे-धीरे निम्न जातियों में अपनी सामाजिक परिस्थिति को ऊँचा उठाने के लिए इच्छा जागृत हुयी। इसी को सर्वप्रथम श्रीनिवास ने संस्कृतिकरण के प्रक्रिया के माध्यम से परिभाषित करने का प्रयास किया। उनका कहना था कि इस प्रक्रिया के माध्यम से निम्न जातियाँ उच्च जातियों का अनुसरण करके उच्च जातियों के अनुष्ठानों, वैचारिकी, खान-पान की आदतों तथा जीवन शैली को अपनाया। यहाँ तक कि इसके अन्तर्गत कुछ क्षेत्रों में निम्न जातियों ने उच्च जातियों के नामों को धारण करना आरम्भ कर दिया। उच्च जातियों में गतिशीलता की प्रक्रिया पश्चिमीकरण के माध्यम से आरम्भ हुयी। इसके अन्तर्गत उच्च जातियाँ पश्चिमी देशों के प्रभाव के फलस्वरूप सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी मूल्यों एवं भूमिकाओं का अपनाने लगे।

योगेन्द्र सिंह का कहना है कि भारत में सामाजिक स्तरीकरण के बदलतें प्रतिमानों के अध्ययन के लिए कुछ चुनी हुई प्रक्रियाओं का प्रयोग किया गया है। जैसे कि जाति, वर्ग, पूँजीवादी, समाजवाद क्योंकि ये स्तरीकरण के अनेक व्यवस्थाओं से सम्बन्धित है। कुछ महत्वपूर्ण प्रक्रियायें जिनके माध्यम से सामाजिक स्तरीकरण में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण किया जाता है

प्रो० श्री निवास ने संस्कृतिकरण और पश्चिमीकरण के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता का विश्लेषण किया है। इन दोनों प्रकार की प्रक्रियाओं के माध्यम से निम्न जातियाँ उच्च जातियों का अनुसरण करके उनके सामाजिक स्तरीकरण में होना वाले परिवर्तनों की मनोवृत्तियों को निम्नलिखित ढंग से व्यक्त किया जा सकता है

1. गांव और क्षेत्र के स्तर पर सामाजिक गतिशीलता का स्वरूप रेखीय है, और कुछ उच्च जातियों में इस गतिशीलता का स्वरूप एक विपरित दिशा में देखा जाता है, गाँवों में मध्यम जातियों का प्रभाव बढ़ गया है।

2. राष्ट्रीय स्तर पर आज भी उच्च जातियाँ सत्ता और आर्थिक क्षेत्र में प्रभावशाली है। भारत में इन्हें सत्ता अभिजात वर्ग कहा जाता है।

गतिशीलता की भावना उत्पन्न हुयी। निम्न जातियों में अपने सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने की मनोवृत्ति बढ़ी और इसके अन्तर्गत निम्न जातियाँ उच्च जातियों को एक संदर्भ प्रारूप के रूप में लिया, जिसके आधार पर वो अपनी सामाजिक स्थिति को गाँवों में ऊँचा उठाने का प्रयास किये (दामले 1968, लिंच 1964)

इस तरह से संस्कृति का मुख्य रूप से सामाजिक परिस्थितियों के परिवर्तन से सम्बन्धित था। परन्तु इसमें वर्ग पर आधारित संरचनात्मक तनावों को जन्म दिया (गोल्ड 1961) इस तरह से संस्कृतिकरण एवं पश्चिमीकरण दोनों सामाजिक परिस्थिति गतिशीलता प्राप्त करने के लिए निम्न जातियों में सांस्कृतिक संसाधनों को एकत्र करने के लिए प्रात्साहित किया।

उपसंहार

भारत में ग्रामीण समाज विशेषकर उत्तर प्रदेश के गाँव अधिक परम्परागत और सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण इन गाँवों में प्रदत्त नियमों के आधार पर होता है। प्रदत्त प्रक्रिया के अन्तर्गत परम्परागत मूल्य आज भी अनेक रूपों में गाँवों में पाये जाते हैं। इनका मिश्रण जाति के नियमों के साथ है। इसलिएए ये परम्परागत विशेषतायें एक साथ मिलकर पहले से पाये जाने वाले सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था को बनाये हुए है, भले इसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन यहाँ-वहाँ मिलता हो। गाँवों में जातियाँ आज भी संदर्भ-समूह के रूप में कार्य करती है। इनका महत्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक ही सीमित नहीं है बल्कि गाँवों के परिवारों के सामाजिक प्रस्थिति का मूल्यांकन जाति के आधार पर होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Miiaralambos and R. Heald (1980). Sociology Themes and Perspectives oxford university press.

2. Backer & Bascoff & Modern Sociological theory in continuity and change-" Wintson New York] 1957

3. M. Harlambos and R. Heald (1980). "Social Themes and Perspercepectives"oxford University press New Delhi.

4. Nadel Fundamentals of social Anthropalogy Kohen] West London 1996

5. Talcott parsons an analylical Approach social Theory and Stratification] the free press 1944.

6- Andre Beteille Social inequality Penguin Books Londan] 1969

7. Y.B. Damley Refference Group Theory Social Mobility in Caste system sage puplication

8. Linch The structure and change in Indian society 1968 Chicago

9. Merriot Multiple References in Indian system Published in silverworg social Mobility in caste system in India- the Hagve publication, Page 106

10. Raymond Aron "Main Currents in sociologicd thought" Penguin Books] Harmonds worth (1968)

11. Leach E.R. (Ed) What should we mean by Caste in Aspects of Caste in South India PP-1&10- Beteille Andra Caste Class and Power P&4 Bombay Oxford University Press (1966).

12. Ishwaran K. Tradition and Economy in Village India (London Routledge and K- Paul 1966) pp. 17-18.

13. Agrarian unrest and Socio-Economic change in Bihar, Monohar Publication, Delhi (1980) Caste and Class in India, Bombay, Popular Book Dept. (1950)

14. Aggrawal P.C. A.R. Desai Ahmad Imtiaz (1971) Bailey, F.G. Beteille, Andre Bhatt Anil Caste, Religion and Power, Sri Ram centre for Industrial Relations, New Delhi; (1971) Social, Background of Indian Nationalism, Bombay Popular Book Dept. (1948).

15. Caste and Economic Frontier Manchester University Press (1957). Caste, Class and Power, Oxford University Press, Bombay; (1966). Caste, Class and Politics, Manohar Book Services, Delhi; (1975)

Corresponding Author

Surendra Narayan*

Research Scholar, Bundelkhand University, Jhansi

sur709@gmail.com

www.ignited.in